International Journal of Geology, Agriculture and Environmental Sciences
Volume – 7 Issue – 1 January-June 2019
Website: www.woarjournals.org/IJGAES *ISSN: 2348-0254*

जयपुर जिले की चौमूं तहसील में जनसंख्या दबाव एवं भूमि उपयोग में बदलाव

डॉ. तरूण कुमार यादव[1], प्रकाश चन्द बाजिया[2]

[1]सहायक प्रोफेसर, श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबडेवाला विश्वविद्यालय, झुन्झुनूं
[2]शोद्यार्थी, श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबडेवाला विश्वविद्यालय, झुन्झुनूं

सारांश

मानव प्रारम्भिक काल से ही भूमि उपयोग करता आ रहा है। जनसंख्या बढ़ने के साथ–साथ भूमि उपयोग में परिवर्तन होने लगा। जब भूमि का उपयोग मानव अपनी आवश्यकतानुसार कर रहा है तो उस भू–भाग के लिये भूमि उपयोग शब्द का प्रयोग होगा अर्थात् भूमि उपयोग में भू–भाग का प्राकृतिक स्वरूप क्षीण हो जाता है। तथा मानवीय क्रियाओं का योगदान महत्वपूर्ण हो जाता है, तभी इसे भूमि उपयोग की संज्ञा देते हैं। शोध का अध्ययन क्षेत्र चौमूं तहसील है, जो राजस्थान राज्य के पूर्वी भाग में विस्तृत जयपुर जिले में स्थित तहसील है। चौमूं तहसील में 2001 में कुल जनसंख्या 3,26,488 थी तथा 2011 में जनसंख्या 3,95,009 हो गयी है। जिसका वितरण चौमूं तहसील के सभी गांवों में समान नही है क्योंकि जनसंख्या वितरण पर उच्चावच, जलवायु, मिट्टी, धरातल, जलापूर्ति, आर्थिक संसाधन (परिवहन, खनिज), सामाजिक–सांस्कृतिक आदि कारक प्रभावित करते हैं। चौमूं तहसील के पूर्वी, दक्षिणी तथा मध्यवर्ती भाग में जनसंख्या का अधिकतम भाग पाया जाता है। चौमूं कस्बे में नगरीय सुविधाओं के कारण सघन जनसंख्या निवास करती है। पश्चिमी भाग में भू–जल स्तर का अधिक गहराई पर पाया जाना तथा कुल मात्रा में कमी, अर्द्धशुष्क जलवायु दशाओं का विस्तार मध्यम उपजाऊ बलुई मिट्टी आदि के कारण कम जनसंख्या पाई जाती है। किसी क्षेत्र विशेष के सन्तुलित विकास के लिये जल–जंगल–जमीन का सन्तुलित होना आवश्यक है। चौमूं तहसील में कुल भू–क्षेत्र 68371 हैक्टेयर है जिसका विविध कार्यों, जैसे– जंगलात, कृषि के अतिरिक्त अन्य काम में ली गई भूमि, ऊसर तथा कृषि अयोग्य भूमि तथा कृषि भूमि के रूप में उपयोग किया जा रहा है।

संकेत शब्द– *भूमि उपयोग, उच्चावच, जलवायु, आर्थिक संसाधन, सामाजिक–सांस्कृतिक, अर्द्धशुष्क जलवायु।*

प्रस्तावना

मानव अपने अस्तित्व काल से ही भूमि का उपयोग करता आ रहा है। जनसंख्या बढ़ने के साथ–साथ भूमि उपयोग में परिवर्तन होने लगा। जब भूमि का उपयोग मानव अपनी आवश्यकतानुसार कर रहा है तो उस भू–भाग के लिये भूमि उपयोग शब्द का प्रयोग होगा अर्थात् भूमि उपयोग में भू–भाग का प्राकृतिक स्वरूप क्षीण हो जाता है। तथा मानवीय क्रियाओं का योगदान महत्वपूर्ण हो जाता है, तभी इसे भूमि उपयोग की संज्ञा देते हैं।

उक्त अध्ययन क्षेत्र में शोध का प्रमुख उद्देश्य बढ़ती जनसंख्या के साथ–साथ भूमि उपयोग में आ रहे बदलाव को प्रदर्शित करना है। जिसके लिये आंकड़ों को उद्देश्य परक व्यवस्थित कर, सारणियन द्वारा

प्रतिशत मान का कमी/वृद्धि के अनुसार प्रदर्शित करना तथा उनके व्यवस्थित का अधिकता शुद्ध अध्ययन के रूप में विश्ल`षित किया गया है।

कृषि कार्य से पूर्व सर्वत्र वन, मरूभूमि, पर्वत पठार जैसे आकृतियों का आधिक्य था इस दशा में भूमि उपयोग (न्यूनतम लाभदायी भूमि उपयोग) ही सम्भव था। इस अवस्था में जहाँ कहीं अनुकूल दशायें विद्यमान थी, अस्थायी कृषि का प्रादुर्भाव हुआ। तीव्रगति से जनसंख्या बढ़ने के फलस्वरूप कृषि क्षेत्र में वृद्धि हुई और कृषि क्षेत्र उत्तरोतर सिकुडता गया। अतः यहाँ यह कहा जा सकता है कि जनसंख्या वृद्धि का भूमि उपयोग से सीधा सम्बन्ध है अर्थात् जनसंख्या वृद्धि भू–उपयोग को बढ़ावा देती है।

भूमि उपयोग आवासीय स्थल पार्क वन (मानव निर्मित), कृषि, नहरों, तालाबों, सड़कों आदि में होता है। नगरीकरण व औद्योगिकरण के फलस्वरूप भूमि उपयोग में काफी परिवर्तन हुआ है। इसका प्रभाव नगरों के आस–पास की भूमि पर अधिक पड़ रहा है। विशेषकर इस से उपजाऊ कृषि क्षेत्र अधिक प्रभावित हुये है। अधिकांश उर्वर भू–भाग आवासों, उद्योगों, सड़कों, नहरों आदि के उपयोग में आ रहा है।

जैफ्रसन फाक्स (2001) ने भूमि उपयोग को निम्न शब्दों में परिभाषित किया है।

"Land utilization is the process of exploiting the land use that is Applied the specific Objective'' अर्थात भूमि उपयोग, भूमि प्रयोग की शोषण प्रक्रिया है जिसमें भूमि का व्यवहारिक उपयोग किसी निश्चित उद्देश्य से किया जाता है।

शोध का अध्ययन क्षेत्र चौंमू तहसील है, जो राजस्थान राज्य के पूर्वी भाग में विस्तृत जयपुर जिले में स्थित तहसील है। जयपुर जिले के मध्य–उत्तरी भाग में स्थित चौंमू तहसील उत्तर में सीकर जिले के साथ जयपुर–सीकर जिले की सीमा का निर्माण करती है। सीकर जिले की श्रीमाधोपुर तहसील चौंमू तहसील के उत्तर में स्थित है। इस सीमा पर चौंमू के किशनपुरा, सिरसा, नांगल–गोविन्द, खेजरोली आदि गांव अवस्थित हैं। चौंमू तहसील के उत्तर पूर्व में जयपुर जिले की शाहपुरा तहसील स्थित है। चौंमू तहसील के दक्षिण पूर्व भाग में आमेर तहसील स्थित है। इस सीमा पर चौंमू तहसील के जाटावाली, चीथवाडी, अनन्तपुरा, जैतपुरा गांव स्थित हैं। चौंमू के पश्चिमी भाग में जयपुर जिले की सांभर तहसील स्थित है। इस प्रकार जयपुर जिले में चौंमू तहसील की स्थिति अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

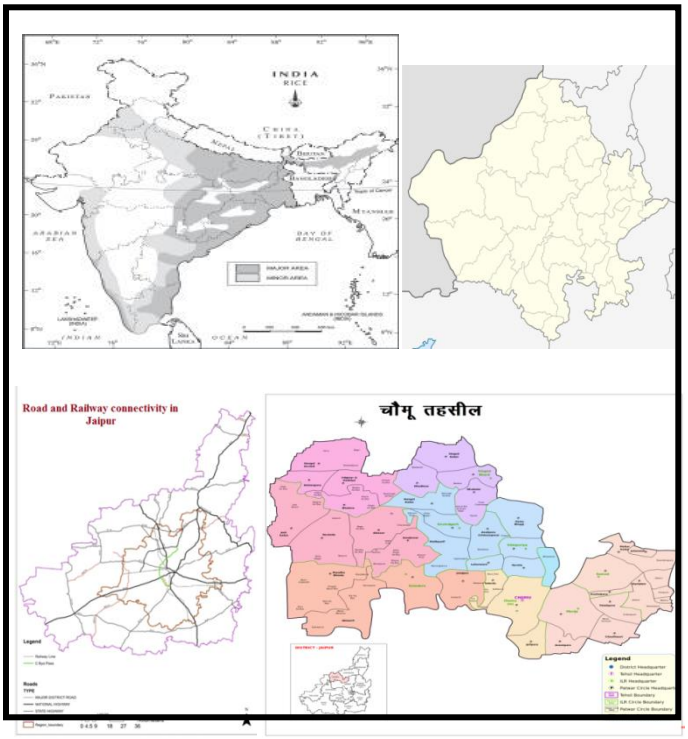

चित्र 1: अध्ययन क्षेत्र अवस्थिति

चौंमू तहसील में 2001 में कुल जनसंख्या 275780 थी तथा 2011 में जनसंख्या 3,95,009 हो गयी है। जिसका वितरण चौंमू तहसील के सभी गांवों में समान नही है क्योंकि जनसंख्या वितरण पर उच्चावच, जलवायु, मिट्टी, धरातल, जलापूर्ति, आर्थिक संसाधन (परिवहन, खनिज), सामाजिक–सांस्कृतिक आदि कारक प्रभावित करते हैं। चौंमू तहसील के पूर्वी, दक्षिणी तथा मध्यवर्ती भाग में जनसंख्या का अधिकतम भाग पाया जाता है। चौंमू कस्बे में नगरीय सुविधाओं के कारण सघन जनसंख्या निवास करती है। पश्चिमी भाग में भू–जल स्तर का अधिक गहराई पर पाया जाना तथा कुल मात्रा में कमी, अर्द्धशुष्क जलवायु दशाओं का विस्तार मध्यम उपजाऊ बलुई मिट्टी आदि के कारण कम जनसंख्या पाई जाती है।

चौंमू तहसील की जलवायु सामान्यतया उत्तरी भारत की जलवायु के समान पायी जाती है। राजस्थान के पूर्वी भाग में स्थित होने के कारण वर्षा का औसत 40 से 60 सेमी. है। सम्पूर्ण वर्षा का 95 प्रतिशत भाग ग्रीष्मकालीन मानसूनी हवाओं द्वारा होता है। शीतकाल में चक्रवातों द्वारा कुछ वर्षा होती है। ग्रीष्मकाल में औसत तापमान लगभग 32° C से 34° C तक रहता है। शीतकाल में औसत तापमान 14° C से 16° C तक पाया जाता है। कभी–कभी मानसून काल में वर्षा की मात्रा के कम होने पर सूखा पड़ जाता है।

चौंमू तहसील के लगभग मध्य से होकर राष्ट्रीय राजमार्ग नम्बर 11 जाता है तथा ग्रामीण सड़कों का जाल लगभग सभी गांवों में बिछा हुआ है। चौंमू तहसील में कुल 108 गांव है। वर्तमान समय में चौंमू तहसील में उद्यान कृषि का प्रचलन तीव्र गति से हो रहा है। विगत कुछ वर्षों में कृषि वानिकी की तरफ भी किसानों का रूझान बढ़ा है। चौंमू तहसील में धरातलीय उच्चावच सम्बंधी विविधता बहुत कम पायी जाती है। अधिकांश धरातल समतल है तथा कृषि फसलों के उत्पादन में प्रयुक्त है। जल स्तर लगभग 12 से 20 मीटर की गहराई पर होने के कारण कुओं तथा नलकूपों द्वारा सिंचाई की पर्याप्त व्यवस्था होने के कारण वर्ष में 3–3 फसलों का उत्पादन किया जाता है।

जनसंख्या संरचना

चौंमू तहसील में वर्ष 2001 में कुल जनसंख्या 275780 थी जिसमें 52.1 प्रतिशत पुरूष एवं 47.9 प्रतिशत महिलाऐं तथा 2011 में जनसंख्या 3,95,009 हो गयी है, जिसमें 52 प्रतिशत पुरूष एवं 48 प्रतिशत महिलाओं की भागीदारी है। इस जनसंख्या का वितरण चौंमू तहसील के सभी गांवों में समान नही है क्योंकि जनसंख्या वितरण पर उच्चावच, जलवायु, मिट्टी, धरातल, जलापूर्ति, आर्थिक संसाधन (परिवहन, खनिज), सामाजिक–सांस्कृतिक आदि कारक प्रभावित करते हैं।

सारणी 1 : चौमूँ तहसील में जनसंख्या

वर्ष	कुल	पुरूष	स्त्री
2001	275780	143709	132071
2011	395009	205667	189342

स्त्रोत : भारतीय जनगणना प्रतिवेदन, 2001 एवं 2011

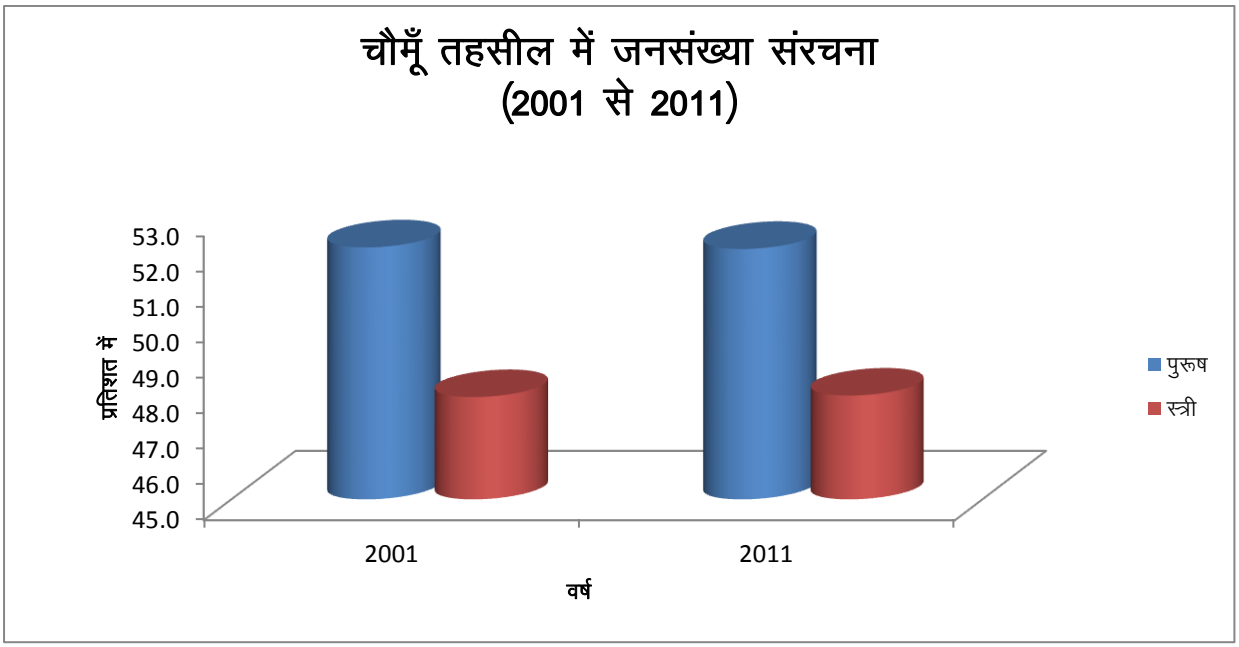

आरेख 1 : चौमूँ तहसील में जनसंख्या संरचना

सारणी 2 : चौमूँ तहसील में 0–6 आयु वर्ग जनसंख्या		
वर्ग	वर्ष 2001	वर्ष 2011
पुरूष	52.5	54.4
स्त्री	47.5	45.6
कुल	100	100

स्त्रोत : भारतीय जनगणना प्रतिवेदन, 2001 एवं 2011

इसी भाँति 0 से 6 के आयु वर्ग में वर्ष 2001 में 52.5 पुरूष एवं 47.5 महिलाऐं थी जो वर्ष 2011 में बढ़कर क्रमशः 54.4 और 45.6 हो गई। इसका तात्पर्य यह है कि यहाँ लिंगानुपात की दर भी घट रही है।

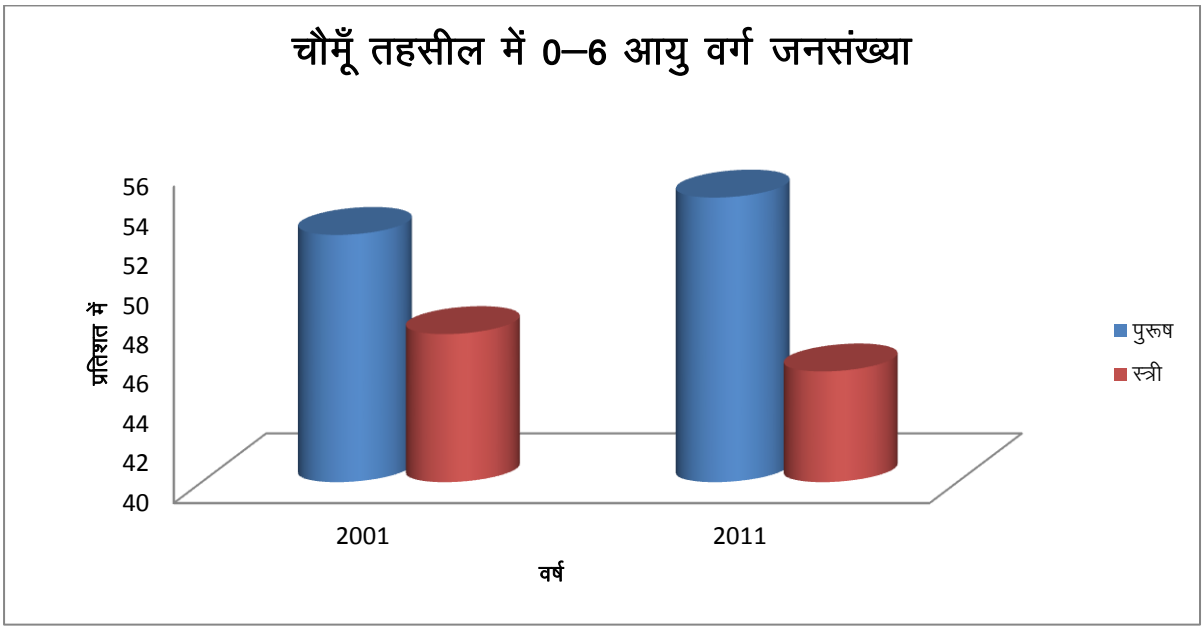

आरेख 2 : चौमूँ तहसील में 0–6 आयु वर्ग जनसंख्या

सारणी 3 : चौमूँ तहसील में कार्यशील जनसंख्या		
वर्ग	वर्ष 2001	वर्ष 2011
पुरूष	62.9	60.5
स्त्री	37.1	39.5
कुल	100	100

स्त्रोत : भारतीय जनगणना प्रतिवेदन, 2001 एवं 2011

चौमूँ तहसील में कार्यशील जनसंख्या में भी भिन्नता का रूप देखने को मिलता है। जहाँ इस वर्ग में पुरूषों की भागीदारी दिनोंदिन घटती जा रही है, वहीं महिलाओं की स्थिति व भागीदारी कार्यशील जनसंख्या के प्रति बढ़ती जा रही है। तालिका के अनुसार जहाँ वर्ष 2001 में पुरूषों की भागीदारी लगभग 63 प्रतिशत थी वहीं वर्ष 2011 में घटकर यह लगभग 60 प्रतिशत ही हो गई। दूसरी ओर महिलाओं की स्थिति कार्यशील जनसंख्या के प्रति बढ़ रही है। वर्ष 2001 में यह लगभग 37 प्रतिशत थी जो वर्ष 2011 में बढ़कर लगभग 40 प्रतिशत हो गई।

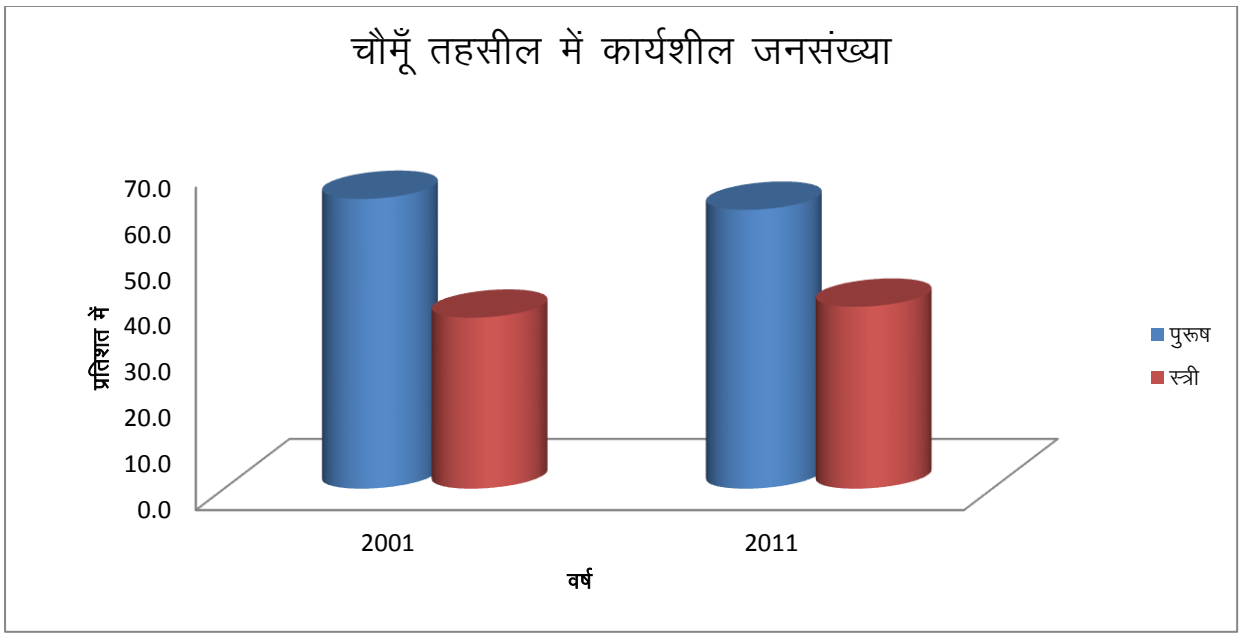

आरेख 3 : चौमूँ तहसील में कार्यशील जनसंख्या

सारणी 4 : चौमूँ तहसील में कृषि कार्यों में संलग्न जनसंख्या		
वर्ग	वर्ष 2001	वर्ष 2011
पुरूष	65.3	54.0
स्त्री	34.7	46.0
कुल	100	100

स्त्रोत : भारतीय जनगणना प्रतिवेदन, 2001 एवं 2011

बढ़ते शहरीकरण ने भूमि उपयोग में बदलाव को जन्म दिया है। चौमूँ तहसील में नगरीकरण के कारण कृषि कार्य भी प्रभावित हुये हैं। इस वर्ग में भी पुरूषों के मुकाबले महिलाओं की अधिक भागीदारी है। वर्ष 2011 में जहाँ 65.3 प्रतिशत पुरूष कृषि कार्यों में शामिल थे वहीं वर्ष 2011 में इनकी भागीदारी केवल 54 प्रतिशत ही हो गई। दूसरी ओर महिलाओं की भागीदारी वर्ष 2001 में 34.7 प्रतिशत थी वहीं वर्ष 2011 में बढ़कर 46 प्रतिशत हो गई।

भूमि उपयोग

किसी क्षेत्र विशेष के सन्तुलित विकास के लिये जल–जंगल–जमीन का सन्तुलित होना आवश्यक है। चौंमू तहसील में कुल भू–क्षेत्र 68371 हैक्टेयर है जिसका विविध कार्यों, जैसे– जंगलात, कृषि के अतिरिक्त अन्य काम में ली गई भूमि, ऊसर तथा कृषि अयोग्य भूमि तथा कृषि भूमि के रूप में उपयोग किया जा रहा है।

सारणी 5 : चौंमू तहसील में भूमि उपयोग

भूमि उपयोग	क्षेत्र (हैक्टेयर में)
जंगलात	2146
कृषि के अतिरिक्त काम में ली गयी भूमि	4092
ऊसर तथा कृषि अयोग्य भूमि	1837
(i) स्थाई चरागाह तथा गोचर भूमि	3805
(ii) वृक्षों के झुण्ड तथा बाग	16
(iii) बंजर (कृषि योग्य भूमि)	435
कुल जोत रहित भूमि (पड़त भूमि के अतिरिक्त) पपपपपप	4256
(iv) अन्य पड़त भूमि	3177
(v) चालू पड़त भूमि	1891
कुल पड़त भूमि ;पअ़अद्ध	5068
(i) वास्तविक बोया गया क्षेत्रफल (उपज को घटाकर)	50962
(ii) समस्त बोया गया क्षेत्रफल	87022
एक से अधिक बार बोया गया क्षेत्रफल (पप.प)	36060

स्त्रोतः पटवार भवन, चौंमू तहसील कार्यालय, चौंमू

इस प्रकार चौंमू तहसील में भूमि का सर्वाधिक उपयोग कृषि क्रियाओं में किया जाता है जो कुल भू–क्षेत्र में से वास्तविक बोया गया क्षेत्र 50962 हैक्टेयर है जो कुल भू–भाग का लगभग 70 प्रतिशत से अधिक है।

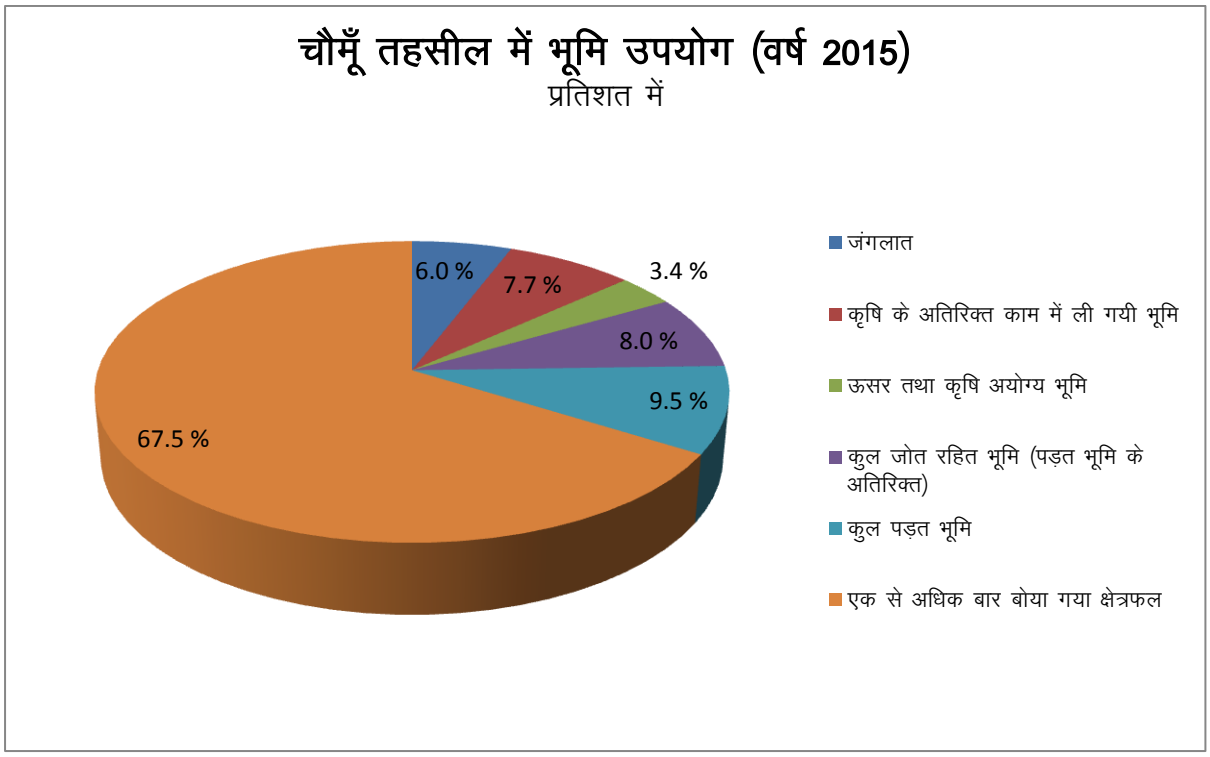

आरेख 4 : चौमूँ तहसील में भूमि उपयोग

चौमूँ तहसील में एक बार से अधिक बार बोया गया क्षेत्रफल सर्वाधिक है। यह सम्पूर्ण क्षेत्रफल का 67.5 प्रतिशत है। यहाँ कुल पड़त भूमि की उपलब्धता भी लगभग 9.5 प्रतिशत है। कुल जोत रहित भूमि का प्रतिशत 8.0 है। कृषि के अतिरिक्त काम में ली गई भूमि का क्षेत्रफल 7.7 प्रतिशत है। जंगलात के रूप में यहाँ 6 प्रतिशत भूमि पाई जाती है तथा कृषि के लिये अयोग्य भूमि केवल 3.4 प्रतिशत ही है।

खरीफ की फसलों में बाजरा का सर्वाधिक उत्पादन होता है। कृषि में आधुनिक तकनीकी का प्रयोग अधिक किया जाने लगा है। जैसे ट्रेक्टर थ्रेसर तथा प्रति हेक्टेयर कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए शंकर बीजों व कीटनाशक तथा खादों का उपयोग किया जाता है। तहसील में पशुओं में गाय, भैंस, भेड़, बकरी और ऊँट आदि पाले जाते है। ऊँटों का प्रयोग कृषि करने तथा बोझा ढोने में किया जाता है। पशुओं से क्षेत्र के लोगों की आय बढ़ी है। सिंचाई सुविधाओं के कारण पशुओं के लिए चारा भी आसानी से मिल जाता है। गाय, भैंस दूध के लिए तथा बकरी, भेड़ मांस व दूध के लिए पाली जाती है। चौंमू तहसील में बलुई दोमट तथा रेतीली मिट्टियाँ पायी जाती है।

विगत 10 वर्षों में उद्यान कृषि के कारण सिंचाई हेतु भूमिगत जल का सर्वाधिक उपयोग किया गया है जिसके कारण जल स्तर में तीव्र गति से गिरावट आई है। वर्ष में दो से अधिक फसलों के उत्पादन के कारण मृदा के कण असंगठित हो गए हैं। जिसके कारण इस क्षेत्र में वायु एवं जल द्वारा तीव्र अपरदन हो रहा है। अतः मिट्टी की उत्पादकता में निरन्तर ह्रास होता जा रहा है। चौंमू तहसील के दक्षिण–पूर्वी भाग के थोड़े से क्षेत्र में होकर बांड़ी नदी तथा पश्चिमी भाग में मेण्ड़ा नदी प्रवाहित होती है। वर्तमान समय में वर्षा में कमी के कारण वर्ष में अधिकांश समय ये नदियां शुष्क रहती हैं। यहाँ पर खरीफ की फसलों में बाजरा, ग्वार, मोठ, मूंग, मूंगफली, कपास, नरमा तथा रबी फसलों में गेहूँ, चना, सरसों, तारामीरा, जौ तथा पशुओं के लिए चारा आदि बोया जाता है। चौंमू तहसील में रबी की फसलों में गेहूँ, चना, सरसों आदि का अधिक उत्पादन होता है।

सन्दर्भः

जनगणना प्रतिवेदन, भारतीय जनगणना विभाग, 2001 एवं 2011।

प्रसाद, राजेन्द्र (2002), ''परिवर्तित भूमि उपयोग और भूमि अवनयन की समस्याऐं– साहिबी नदी क्षेत्र'', अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

श्री चन्द, (2005), ''भरतपुर जिले में सिंचित कृषि विस्तार का एक कृषि भौगोलिक अध्ययन।'' अप्रकाशित शोध प्रबन्ध राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

तिवारी, आर.सी. एवं सिंह, वी.एन. (2010), ''कृषि भूगोल'', प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

महवर गोपीलाल व प्रसाद रामा (2010) : राजस्थान में भूमि उपयोग का भौगोलिक विश्लेषण ॲनाल्स अंक XXVII पृष्ठ 210–217